Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

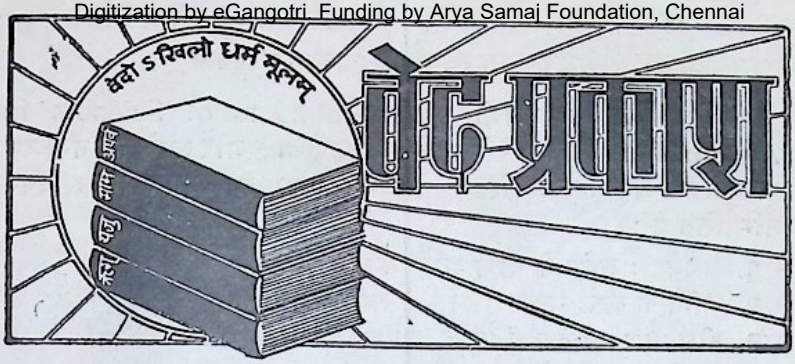

शत्रु-दमन

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
यो अस्मां२ अभिदासत्यधरं गमया तमः॥

यजुर्वेद १८।७०

पदार्थ—हे (इन्द्र) परम बलयुक्त सेना के पति ! तू (मृधः) संग्रामों को (वि, जहि) विशेष करके जीत (पृतन्यतः) सेनायुक्त (नः) हमारे शत्रुओं को (नीचा) नीच गति को (यच्छ) प्राप्त करें। (यः) जो (अस्मान्) हमको (अभि-दासति) नष्ट करने की इच्छा करता है उसको (अधरम्) अधोगति रूप (नमः) अन्धकार को (गमय) प्राप्त कर।

भावार्थ—सेनापति को योग्य है कि संग्रामों को जीते। उस विजय-कारक संग्राम से नीचकर्म करनेहारों का निरोध करे। राजप्रथाओं में विरोध करनेहारों को अत्यन्त दण्ड देवे।

दुष्ट-संहार

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः॥ यजुर्वेद ३३।९॥

पदार्थ—हे विद्वन् ! जैसे (समिद्धः) सम्यक् प्रदीप्त (शुक्रः) शीघ्रकारी (अग्निः) सूर्यादि रूप अग्नि (वृत्राणि) मेघ के अवयवों को (जंघनत्) शीघ्र हटाता है वैसे (द्रविणस्युः) अपने को धन चाहनेवाले (आहुतः) बुलाये हुए आप (विपन्यया) विशेष व्यवहार की युक्ति से दुष्टों को शीघ्र मारिये।

भावार्थ—इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। जैसे व्यवहार का जाननेवाला पुरुष धन को पाके, सत्कार को प्राप्त होकर दोषों को नष्ट करता है वैसे सूर्य मेघ को ताड़ना देता है।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार

लेखक—**श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती**

स्वामीजी की अँग्रेजी पुस्तक 'Founders of Sciences in Ancient India' का सारे विश्व में स्वागत हुआ है और उसके कई संस्करण हो चुके हैं। यह हिन्दी संस्करण अब पुनः छपा है। इसमें निम्न विषय सम्मिलित हैं :

१. **अथर्वन्** : अग्नि के पहले आविष्कारक
२. **अग्नि के** द्वारा यन्त्र-साधनों का आविष्कार
३. **दीर्घतमस्** : वैदिक संवत् के आविष्कर्ता
४. **गार्ग्य** द्वारा नक्षत्रों का पहली बार संख्यान
५. **भरद्वाज** द्वारा प्रथम वनस्पति-गोष्ठी का सभापतित्व
६. **आत्रेय पुनर्वसु** और उनकी चिकित्सापीठ
७. **सुश्रुत** : शल्य-चिकित्सा के पिता
८. **कणाद** : यथार्थवाद, कारणवाद और परमाणु सिद्धान्त के पहले प्रतिपादक
९. **मेधातिथि** : अंकों को पहले-पहल परार्ध तक पहुँचाने वाले
१०. **आर्यभट्ट** द्वारा बीजगणित का शिलारोपण
११. **लगध** : ज्योतिष को युक्तिसंगत करने वाले प्रथम ऋषि
१२. **लाटदेव और श्रीषेण** द्वारा भारत में ग्रीक ज्योतिष का सूत्रपात
१३. **बौधायन** : सबसे पहला महान् ज्यामितिज्ञ

यह महान् ग्रन्थ 'वेदप्रकाश साइज' में छपकर तैयार, बढ़िया कागज़, आफसैट की छपाई, कपड़े की पक्की जिल्द, मूल्य ३२५-००।

षड्दर्शनम्

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

इस ग्रन्थ में छहों भारतीय दर्शनों को एक ही जिल्द में मूल सूत्र तथा हिन्दी अनुवाद सहित संकलित कर दिया गया है। अन्त में सूत्रों की अकारादिक्रम से अनुक्रमणिका इसकी एक अतिरिक्त विशेषता है।

भारतीय दर्शनों की विशेषताओं में उनका व्यावहारिक पक्ष, आशावाद, नैतिक व्यवस्था में विश्वास, कर्मसिद्धान्त, तथा मोक्षमार्ग का निर्देश आदि प्रमुख विशेषताएँ हैं।

मूल्य १००-००

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वेदप्रकाश

संस्थापक : स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द

वर्ष ३९, अंक ९] वार्षिक मूल्य : बीस रुपये [अप्रैल १९९०

सम्पा० : विजयकुमार आ० सम्पादक : स्वा० जगदीश्वरानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

प्रजातंत्र ?

--मूलचन्द गौतम
१२२२, पापोसियान
नरेला, दिल्ली-११००४०

विश्व में साधारणतया तीन प्रकार की सरकारें पाई जाती हैं। राजतंत्र में बादशाह सारे अधिकार अपने पास रखता है परन्तु सहायता तथा विचार-विमर्श के लिए एक मंत्रि-परिषद् भी नियुक्त कर लेता है। सर्वोपरि राजा अपने को ही रख अपने ढंग से ही राज-काज चलाता है। यदि देश में शान्ति रहती है तो श्रेय स्वयं लेता है; किसी भी प्रकार की अशान्ति होने पर वह मंत्रि-परिषद् पर वा किसी भी एक मंत्री पर दोष थोपकर अपने को खरा रखने का प्रयत्न करता रहता है। ऐसा राजा समय और अवसर पाकर तानाशाह भी बन जाया करता है और उसकी आज्ञा ही विधि-विधान का रूप ले लेती है। तब वह प्रजा और राज्य को अपने लिए ही समझकर प्रजा का उत्पीड़न करने लगता है, धन की लालसा में प्रजा का शोषण तीव्रतर हो जाता है। राजा के चाटुकार राजा की स्तुति करते रहते हैं; उसे प्रजा के हाहाकार से दूर रखते हैं और अपने मनोवांछित स्वार्थों को पूरा करते रहते हैं। परिणामतः तंग आकर प्रजा विद्रोह का बिगुल बजाकर राजा के मुकाबिले पर आ खड़ी होती है। जनता यदि जग जाये तो वह कमजोर होने पर भी सिंह की भाँति शक्तिशाली बन जाती है; राजा और राज्य को अपने हाथ में लेकर राजा के भाग्य का निर्णय ले लेती है तथा राज्य को स्वयं संभाल लेती है। रूस देश (के ज़ार बादशाह) का उदाहरण हमारे सामने है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक और प्रकार की सरकार होती है जो एक ही व्यक्ति के इशारे पर चलती है जिसे अधिनायक (डिक्टेटर) कहते हैं। चरित्रवान् अधिनायक देश को ऊँचा उठाता है, देश की शक्ति बढ़ाता है और शक्ति-सम्पन्न होने पर आसपास के छोटे-छोटे राष्ट्रों को हड़पकर अपने राज्य में मिलाता रहता है। उसकी लालसा बढ़ती जाती है। स्वयं या किसी और दूसरे शक्तिशाली राष्ट्र को साथ ले संसार में अपना साम्राज्य स्थापित करने का सपना सँजो के किसी बड़े राष्ट्र से भिड़ जाता है और संसार को दो-तीन गुटों में बाँटकर उसे युद्ध की आग में झोंक बैठता है। अन्ततः स्वयं तो जान खोता ही है, अपने राष्ट्र के पतन का भी कारण बन जाता है। उसका घमण्ड उसे और उसके देश को कहीं का नहीं छोड़ता। जर्मन देश सशक्त होते हुए भी हर हिटलर अधिनायक के कारण आज दो भागों में पिछले चालीस दशक से ऊपर हुए बँटा पड़ा है। जिन यहूदियों को उसने मिटाना चाहा था आज वे इसरायल नाम से अपना एक देश खड़ा कर उसे इतना सशक्त बना चुके हैं कि सारे अरब देश उसका लोहा मानने लगे हैं।

तीसरे प्रकार का राज्य प्रजातन्त्र राज्य कहलाता है। इसमें प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि अपनी सरकार का गठन करते हैं। इस प्रकार यह प्रजा का अपना राज्य प्रजा के लिए होता है। इस राज्य में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त होते हैं। प्रजा राज्य के लिए न होकर राज्य प्रजा के लिए होता है। ऐसा कम देखने में आया है कि सीधे चुने गये प्रतिनिधियों के किसी दल का संगठन किये बिना राज्य में सरकार का गठन हुआ हो। दलीय राजनीति के आधार पर जो दल बहुमत में आ जाता है वही अपनी सरकार का गठन कर लेता है। अनेक दल बनने पर आपस की स्पर्द्धा में झगड़े खड़े हो जाते हैं तथा देश में अराजकता का कारण भी यही दल बन जाते हैं। इसमें चरित्रहनन और चरित्रहीनता पनपकर देश में अशान्ति की बाढ़ आ जाती है; प्रजा का भी शोषण होता है। यदि देश के नेता और बुद्धिजीवी लोग आगे नहीं आते तो देश का विघटन टाले नहीं टलता। प्रजातन्त्र के लिए देश में रहनेवालों का चरित्र-बल बना रहना अत्यन्त आवश्यक है। केवल बुद्धि ही से काम नहीं चलता। चरित्रहीनता और चरित्रहनन ही देश को गिराता है। अतः प्रजातन्त्रवाले देशों में नेताओं को अपने चरित्र को साफ-सुथरा और उज्ज्वल रखना अनिवार्य है। ऐसे ही सरकारी कर्मचारियों में यदि चरित्र की ओर ध्यान नहीं दिया जाता तो वे प्रजातन्त्र को बदनाम करके ही रहते हैं।

ब्रितानिया एक ऐसा देश है जहाँ अपने देश की बादशाहत को स्थिर रखते हुए भी, उसे प्रथम नागरिक मानते हुए भी, सत्ता प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में है। वहाँ चरित्र-बल अभी विद्यमान है। किसी भी मंत्री अथवा राजनयिक पर यदि कोई आरोप ऐसा लगता है जो सही पाया जा सके तो वहाँ मंत्री अथवा राजनयिक पद त्याग देता है। छोटे-मोटे घोटाले हो सकते हैं, परन्तु ऐसी कोई घटना नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घटती कि देश के नाम को बट्टा लग जाय। वहाँ भी दलीय सरकारें बनती हैं; परन्तु मुख्य दो ही दल हैं। जो उनमें से बहुमत में आता है, अपनी सरकार का गठन करता है। ब्रितानिया विश्व में विख्यात रहा है। उसका साम्राज्य इतना बड़ा रहा कि उसके बारे में कहावत-सी बन गई कि अंग्रेजों के राज में सूरज नहीं छिपता। विश्वयुद्ध के पश्चात् सभी देश, जो इसके अधीन थे, स्वतंत्र हो चुके हैं; परन्तु ब्रितानिया ने अपनी सूझ-बूझ के कारण सभी को आज भी अपने साथ लगा रखा है और उनमें अब भी वही प्रधान है।

भारतवर्ष एक प्राचीन देश है तथा इसकी सभ्यता, संस्कृति और इतिहास भी उतना ही प्राचीन है। देखें वेद में तथा साहित्य में राजतंत्र के सम्बन्ध में हमें क्या मिलता है। इससे भी पहले यह देख लें कि इसकी प्रजा चार वर्णों में विभाजित थी। कोई भी व्यक्ति किसी भी वर्ण को अपना सकता था। यह जन्म से नहीं, प्रत्युत कर्म पर आधारित था। वर्ण चार थे—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। जो व्यक्ति त्यागी, तपस्वी, मेधावी, विद्वान्, निष्पक्ष, अभय तथा चरित्र में महान् थे वे ब्राह्मण वर्ण में आते थे। क्षत्रिय वर्ण में वे ही आते थे जो शरीर से बलिष्ठ हों, चरित्रवान् और अस्त्र-शस्त्र के प्रयोग में दक्ष हों। इनका काम राष्ट्र और प्रजा की सब प्रकार से रक्षा करना था। खेती-बाड़ी, पशुपालन तथा व्यवसाय करनेवाले वैश्य कहे गये हैं। जो इन तीनों में से किसी भी वर्ण में सम्मिलित होने में समर्थ न थे, वे चौथे वर्ण शूद्र में गिने जाते थे। शूद्रों में अधिक लोग शिल्पी होते थे। वे शेष वर्णों के व्यक्तियों के सहयोगी और सेवक रह जाते थे। पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि इनमें से प्रत्येक उन्नति करते-करते दूसरे, अर्थात् अपने से ऊपरवाले वर्ण में जा सकता था। इसी प्रकार व्यक्ति गिरते-गिरते नीचे-से-नीचे भी जा सकता था। व्यक्ति का गुण, कार्य तथा स्वभाव ही उसके वर्ण का परिचायक रहा है।

ब्राह्मण का कार्य था ज्ञान-विज्ञान का प्रचार तथा सबको चरित्र-निर्माण के धनी बनाना। ब्राह्मण ही क्षत्रिय को सभी अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा देता था। परन्तु, जहाँ तक हो सके वह स्वयं अपने अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग न करता था क्योंकि रक्षा का काम क्षत्रियों के जिम्मे रहा। वैश्य राष्ट्र में किसी वस्तु की कमी न रहने देता था। वह देश में खपत से अतिरिक्त वस्तुएँ दूसरे राष्ट्रों में भेज देता था तथा जो वस्तुएँ अपने देश में नहीं मिलती थीं उनको दूसरे देशों से लाकर देश की आवश्यकता की पूर्ति करता था, अर्थात् व्यापार वैश्यों के हाथ में था। वैसे, शूद्र भी अपने कर्म से ब्राह्मण बन सकता था। इसी प्रकार दुष्कर्मों के फलस्वरूप एक ब्राह्मण शूद्र तक कहलाया जा सकता था।

वे नियम, सिद्धान्त अथवा कार्य-प्रणाली, जिसका पालन करने से व्यक्ति और समष्टि अर्थात् समाज एवं राष्ट्र सुदृढ़ स्थिति को प्राप्त होता है, 'धर्म' कहाता है। अतः जो नियम, सिद्धान्त तथा प्रणाली स्वयं स्पष्ट और राष्ट्र को उन्नत करने-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाले हों, शुभ्र और प्रकाशित हों, वही 'राजधर्म कहाते' हैं।

राष्ट्र-धर्म तथा राज-धर्म का पहला सिद्धान्त है निष्पक्षता और न्यायपूर्णता का होना। इसे अधिक स्पष्ट करते हुए यों कहा जा सकता है कि सामाजिक अथवा राष्ट्रीय नियमों के पालन में सबका परतंत्र रहना और इन नियमों का दृढ़ता से पालन करना-कराना। ऐसा पालन न करनेवालों को पक्षपात-रहित होकर दण्डित करना, ताकि समाज व्यवस्थित और सुदृढ़ रहे। यह कार्य प्रत्येक के बस का नहीं है। इसके लिए चाहिए प्रखर बुद्धि और उग्र बल वाले व्यक्ति, उनसे ही यह संभव है। वेद में इसको 'ब्रह्म' और 'क्षत्र' शब्दों से कहा गया है—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं, यत्र देवा सहाग्निना॥ (यजुः० २०/२५)

अर्थात् जिस देश या राष्ट्र में उत्तम विद्वान् ब्राह्मण और विद्वान् शूरवीर क्षत्रिय मिलकर राज्य-कर्मों को सिद्ध करते हैं, वही देश, धर्म (इसमें विधि-विधान भी सम्मिलित है) तथा शुभ क्रियाओं (नियमानुसार आचरण और शिक्षा) से युक्त होकर सुख को प्राप्त होते हैं।

इस मंत्र में 'ब्रह्म' (ज्ञान) और 'क्षत्र' (कर्म) के समंजित आचरण से देश में सुख-शान्ति, समृद्धि तथा अखण्ड राज्य की प्राप्ति बताई है। 'ब्रह्म' विवेक-शक्ति का और 'क्षत्र' दण्ड देने के सामर्थ्य का प्रतीक (द्योतक) है।

महाभारत के महात्मा व्यास ने भी संजय के मुख से कहलवाया है—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ (गीता १८/७८)

अर्थात् जहाँ इस ज्ञान-यज्ञ की कृपा से योगेश्वर कृष्ण का अनुकरण करनेवाले सच्चे नेता हों, तथा जहाँ अर्जुन जैसे धनुर्धारी उनके अनुयायी हों, वहाँ श्री, विजय, भूति तथा ध्रुवानीति, ये सदा विराजते हैं, यह मेरा मत है।

यजुर्वेद के चालीसवें (अन्तिम) अध्याय में परमात्मा ने यही उपदेश दिया है कि ज्ञान और कर्म के समन्वय से ही मनुष्य इस भवसागर को तरके मोक्ष-पद पा सकता है।

इस सम्बन्ध में ऐतरेय ब्राह्मण में बड़ी उत्तम रीति से वर्णन किया गया है, देखिये—

जनिष्ठा उग्रसहसेतुरायोति सूक्तमुग्रवत् सहस्वत्।
तत्क्षत्रस्य रूपं मन्द्र ओजिष्ठ इत्योजस्वत् तत्क्षत्रस्य रूपम्॥

अर्थात् उत्तम विद्वान् धर्मात्मा पुरुष जो दृढ़तापूर्वक नियमाचरणकर्त्ता है, जनिष्ठ है। क्षत्रिय प्रथम जनिष्ठ होता है। देश, काल, वस्तु के अनुसार सुख-दुःख, गरमी-सरदी, मान-अपमान को, राष्ट्रोन्नति के लिए सहना पड़ता है। तब वह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहस्वान् होता है। विपरीत परिस्थितियों में निर्बल धर्मात्मा पुरुष की रक्षा करते हुए दुष्टों को दण्ड देना अनिवार्य हो जाता है, नियमों के उल्लंघन करनेवालों के प्रति कठोरता का व्यवहार करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। तब वह 'उग्रवान्' होता है। पराक्रमी बन प्रजा को आनन्दित करने के लिए वह शान्त और प्रसन्न रहता है। तब वह मन्द्र ओजस्वी बन जाता है।

शिक्षा-दीक्षा के अभाव में पराक्रमी व्यक्ति भी क्रोधी, स्वार्थी, प्रजा को पीड़ित और तिरस्कृत करनेवाला हो जाता है। परन्तु पराक्रम के साथ-साथ जो विवेकशील भी होगा, वह दूसरे के अधिकार का अतिक्रमण नहीं करेगा, क्रोधी और स्वार्थी नहीं होगा, वह धर्मात्मा (विधि-विधान को माननेवाला, नियमों का उल्लंघन न करनेवाला), जितेन्द्रिय होकर प्रजा का पालक, रंजक, रञ्जक होगा। यही राज्याधिकारी का सत्य स्वरूप है, इसलिए क्षत्रिय को जनिष्ठ, उग्र, सहस्वान् और ओजिष्ठ बनना होता है।

बृहत्पृष्ठं भवति, क्षत्रं वै बृहत्, क्षत्रेणैव तत्क्षत्रं समर्द्धयति। अथो क्षत्रं वै बृहदात्मा यजमानस्य निष्केवल्यं तद्यत् बृहत्पृष्ठं भवति॥

अर्थात् क्षत्र-कर्म अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह निर्बलों का रक्षक तथा उत्तम सुखदायक है। इससे क्षत्र-धर्म की उन्नति होती है। प्रजा तथा राजपुरुष यजमान है। क्षत्र-धर्म (त्राण की भावना) आत्मा है। संसार के समस्त प्राणियों के लिए परम सुख-सम्पादन में समर्थ है। अतः वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

ओजो वा इन्द्रियं वीर्यं पंचदश, ओजः क्षत्रं वीर्यं राजन्यः तदेनमोजस्य क्षत्रेण वीर्येण समर्द्धयति। तद्भारद्वाजं भवति, भारद्वाजं वै बृहत्।

अर्थात् उत्तम विद्या और न्याययुक्त राज-कर्म ओज है। इसका उल्लंघन राज के भय से कोई नहीं कर सकता। ओज का नाम क्षत्र और पराक्रम का नाम राजन्य है। दोनों के परस्पर मिलने से संसार की उन्नति होती है।

बुद्धि, मेधा, ज्ञान-विज्ञान विद्या आदि का एक नाम है 'ब्रह्म', अर्थात् सर्वज्ञ परमात्मा के समान ज्ञानी, मेधावी। मेधा के सर्वोत्कृष्ट रूप को अतिशयोक्ति द्वारा अल्पज्ञ पुरुष को 'ब्रह्म' नाम से पुकार लिया जाता है।

आगे कहते हैं—

ब्रह्म वै रथन्तरं क्षत्रं बृहत्, ब्रह्माणि खलु वै क्षत्रं प्रतिष्ठितं, क्षत्रे ब्रह्म।

अर्थात् ब्रह्म (परमेश्वर) और वेद-विद्या, इन दोनों से युक्त जो आस्तिक श्रेष्ठ विद्वान् व्यक्ति है, वह ब्राह्मण है। उसी के कारण क्षत्र-धर्म (राज-कर्म) प्रतिष्ठित होता है। सत्य विद्या (ब्रह्म) से क्षत्र-धर्म की और उत्तम रीति से आचरित राजन्य-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म से 'ब्रह्म' की उन्नति होती है। दोनों के सम्यक् सहयोग से राष्ट्र की उन्नति, समृद्धि तथा शान्ति प्राप्त होती है।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति। – अथर्व० ११-५ (७) १७

अर्थात् राष्ट्र का अधिकारी (राजकर्मचारियों-सहित) ब्रह्मचर्य अर्थात् विद्याध्ययन और वीर्य-संरक्षणरूप तप के द्वारा राष्ट्र का संरक्षण करता है।

भावार्थ यह है कि राजा और राजकर्मचारियों का जितेन्द्रिय होना अनिवार्य है। जो इन्द्रियों के दास हैं वे तो कभी भी गड़बड़-घोटाला कर सकते हैं, बलात्कार के अपराधी बन सकते हैं, विलासी जीवन बिताने के लिए विदेशों से धन लेकर राष्ट्र का भी अहित कर बैठते हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण में ही कहा है—

नमो ब्रह्मणे। ब्रह्मण एव तत्क्षत्रं वशमेति, तद्यत्र वै ब्राह्मणः क्षत्रं वशमेति, तद्राष्ट्रं समृद्धं तद्वीरवदाह अस्मिन् वीरो जायते।

अर्थात् परमात्मा के आज्ञाकारी, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, लोकहित-चिन्तक विद्वान् जिस राष्ट्र का मार्ग-निर्देशन करते हैं, वहीं सच्चे वीर पुरुष जन्म लेते हैं। जन्म देनेवाले तो माता-पिता हैं। राष्ट्र की सात्त्विक गतिविधियाँ, राज्य के अधिकारियों की मनोवृत्ति और महापुरुषों का आचरण राष्ट्र के शुद्ध वातावरण का निर्माण करते हैं, जहाँ अबोध शैशव उत्तम गुणों की धारणा करता हुआ समर्पित वीर तरुणों को सिद्ध करता है। महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' में इस प्रकार स्मरण किया है—

स पिता पितरस्तेषां केवलं जन्महेतवः।

अर्थात् माता-पिता तो मात्र जन्म के कारण हैं। रक्षक, पालक, और सदाचार आदि का शिक्षक होने के कारण वह राजा दिलीप ही प्रजा का वास्तविक पिता था।

दूसरा सिद्धान्त राजतन्त्र के विषय में है। ये 'ब्रह्म और क्षत्र' किस प्रकार के तन्त्र में भली प्रकार मिलकर कार्य कर सकते हैं? एक श्रेष्ठ पुरुष पराक्रमी और विद्वान् है। वह अकेला ही राजा (शासन-अध्यक्ष) स्वीकारा जाय, या प्रजा द्वारा निर्वाचित, या कोई अन्य पद्धति लागू हो?

वेद एवं ब्राह्मणग्रन्थ एकतन्त्र को हानिकारक, अवनतिमूलक मानते हैं। ऐसे राष्ट्र में अभावों से प्रजा पीड़ित रहती है। शतपथ ब्राह्मण (का० १३, अ० २, कां० ६) में कहा गया है—

"राष्ट्रमेव विश्याहन्ति, तस्माद्राष्ट्री विशं वा घातुकः।
विशमेव राष्ट्रायायी करोति। तस्माद्राष्ट्री
विशमन्ति, न पुष्टं पशुं मन्यत् इति।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

अर्थात् जो राजा (शासनाध्यक्ष) राष्ट्र को पर्यायवाची हो जाता है, उसे 'राष्ट्री' कहते हैं। अगर यह घोषणा (नारा) लगे कि दशरथ ही भारत है और भारत ही दशरथ है—तो दशरथ राष्ट्री कहलाएगा। वही राष्ट्र का अकेला सर्वेसर्वा हो जाता है। वह स्वाधीन, उन्मत्त, स्वेच्छाचारी होकर प्रजा को पीड़ित करता है; समस्त उत्कृष्ट पदार्थों पर अपना अधिकार जमा लेता है, अपने से अधिक किसी के प्रकर्ष को सहन नहीं करता। वह प्रजा को ही खाने लगता है। उदाहरणार्थ जंगल का शेर अपने से बलिष्ठ पशु को मारकर, उसका मांस अधिक चाव से खाता है। यही अवस्था एकतन्त्र-'राष्ट्री' राज्य की होती है।

त्रीणि राजानां विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्, व्रते गंधर्वां अपि वायुकेशान्॥

(ऋग्वेद ३।३८।६)

अर्थात् राजा और प्रजा के पुरुष मिलके सुख-प्राप्ति और विज्ञान-वृद्धिकारक राजा-प्रजा के सम्बन्धरूप व्यवहार ये तीन सभा अर्थात् विद्यार्य्यसभा, धर्मार्य्य-सभा, राजार्य्यसभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा-सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें। जो व्यक्ति सत्याचरण में दृढ़व्रती है और मननपूर्वक सत्य न्याय जानता है, वह सभाध्यक्ष होने योग्य है। भौतिक समृद्धि को बढ़ाने और प्रजा-पालनादि व्यवहार में कुशल व्यक्ति सभासद् होने के योग्य है। सूर्य की किरण के समान सत्य न्याय के प्रकाशक और अपने गुणों से जिनकी कीर्ति स्वयं उन्हें प्रकाशमान सिद्ध कर रही है, वे सभासद् होने के योग्य हैं।

इस मन्त्र में तीन सभाओं, उनके सभासदों तथा अध्यक्ष के गुणों का दिग्दर्शन मात्र है। साथ ही उनका चुनाव सभी सामान्य लोग करेंगे—ऐसा स्पष्ट नहीं है। उनका चुनाव विशिष्ट लोग, जो गुण परखने में कुशल हैं, उनके द्वारा होता है। क्योंकि एक विद्वान् जो काम कर सकता है वह काम एक सहस्र मूर्ख नहीं कर सकते। कहा भी है—

एकश्चन्द्रो तमो हरति, न च तारागणोऽपि च।

अर्थात् एक चन्द्रमा सारे अँधेरे को दूर कर देता है; सारे तारे मिलकर भी नहीं कर सकते।

दूसरा यहाँ पर एक को राजा न स्वीकार करके तीन सभाओं के अधीन राज्य-कर्म सौंपने का विधान है।

एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः॥ (मनु०)

अर्थात् यदि अकेला सब वेदों का जाननेहारा द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
धर्म की व्यवस्था करे, वही श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि सहस्रों-लाखों-करोड़ों अज्ञानी मिलके भी जो कुछ व्यवस्था करें उसको कभी न मानना चाहिए।

इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम्।
जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः॥ (मनु०)

अर्थात् सब सभासद् और सभापति इन्द्रियों को जीतके अर्थात् अपने वश में रखके सदा धर्म में वर्तें और अधर्म से हटे-हटाए रहें। इसलिए रातदिन नियत समय में योगाभ्यास भी करते रहें, क्योंकि कोई भी अपनी इन्द्रियों (मन, प्राण और शरीर प्रजा है इस) को जीते बिना बाहर की प्रजा को अपने वश में स्थापन करने को समर्थ कभी नहीं हो सकता।

ऋग्वेद के मन्त्र (म० ३, सू० ३८, मंत्र ६) में राजा शब्द द्विवचन में प्रयुक्त है। इसका अभिप्राय है कि प्रजा और राज्याध्यक्ष मिलकर व्यवस्था करेंगे। राजा का अर्थ है प्रजा का रंजन करनेवाला—**'राजा प्रजारंजनात्'**। प्रजा का रंजन, प्रजा के कष्टों के निवारण और समृद्धि बढ़ाने से होता है। प्राथमिक आवश्यकता भोजन और आच्छादन अर्थात् रोटी, कपड़ा और मकान है जिसकी पूर्ति से ही रंजन होता है। मात्र मनोरंजन की सामग्री जुटाकर ध्यान हटानेवाला 'राजा' कहलाने का अधिकारी नहीं।

आजकल 'राजा' शब्द एकाधिकार-सम्पन्न निरंकुश व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने से सम्मानसूचक नहीं रहा। जब से वर्ण-व्यवस्था कर्म से लागू न करके जन्म से लागू होने लगी है, तभी से राजा भी वंशगत होने लगे हैं। इस कारण वे प्रजा-पालक न होकर प्रजाभक्षक (राष्ट्र) हो गए हैं।

तीनों सभाओं के सभासदों में से जो व्यक्ति अपने गुण-कर्म-स्वभाव से सूर्य-रश्मिवत् सर्वोत्तम प्रकाशमान है, वही सभाध्यक्ष होने योग्य है; सभा-अध्यक्ष ही राजा है। पं० विष्णु शर्मा ने 'पंचतन्त्र' में सर्वोत्तम पुरुष की पहिचान की विधि निम्न श्लोक में दी है—

गुणीगण-गणनारम्भे पतति न कठिनी सुसम्भ्रमाद्यस्य।
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद बन्ध्या कीदृशी नाम॥

अर्थात् गुणियों की सभा लगी है। उसमें सर्वश्रेष्ठ गुणी का चयन करना है। चयनकर्ता सोचने में क्षण-भर विलम्ब किये बिना गुणी व्यक्ति के चरित्र से परिचित होने के कारण, एकदम जिस व्यक्ति की ओर अँगुली उठाता है, वही श्रेष्ठ है। कवि तो और आगे चला गया है। वह अन्य सभी की माताओं को बन्ध्या कह रहा है। इस अतिशयोक्ति का कवियों को अधिकार है।

तीन सभाओं के कार्य का विभाजन

(१) **विद्या सभा**--मुख्यतया सभी प्रकार की विद्याओं (ज्ञान, विज्ञान,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
साहित्य, शिल्प आदि) की निरन्तर उन्नति, प्रसार होता जाय। इसके अधिकारी उद्भट विद्वान् होंगे।

(२) **धर्म सभा**—जिससे धर्म (विधान के प्रावधानों) का पालन और अधर्म (विधान का उल्लंघन) की हानि होती रहे। इसके अधिकारी धार्मिक (ज्ञानी, विज्ञानी एवं विधिवेत्ता) विद्वान् होंगे।

(३) **राज सभा**—जिससे समस्त राज-कार्य (न्याय, दण्ड, रक्षा, बाहर के देशों से सम्बन्ध और उनके साथ व्यापार आदि) की विशेष सिद्धि होती रहे। इसके अधिकारी प्रशंसनीय धार्मिक (नीति-विशेषज्ञ) पुरुषों को नियत किया जाय।

तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम बनाए जाएँ।

व्यवस्था—नियमों के अधीन सब लोग वर्तें, सर्वहितकारक कार्यों में सम्मति दें। सभी सर्वहितकार्यों में परतन्त्र तथा धर्मानुकूल निज कार्यों में स्वतन्त्र रहें।

इसका अभिप्राय यह है कि सभाध्यक्ष के अधीन सभा, सभा के अधीन सभाध्यक्ष रहें। सभाध्यक्ष और सभा, प्रजा के अधीन तथा प्रजा राजसभा के अधीन रहे। किन्तु एक को स्वतन्त्र अधिकार न देना चाहिए।

मताधिकार—'ब्रह्म' और 'क्षत्र' शब्द मताधिकार का संकेत दे रहे हैं। मत पाने का अधिकार मात्र उत्तम ब्राह्मण और क्षत्रियों का है। मतदाता के निश्चय के लिए 'ब्रह्म और क्षत्र' यह संकेत देते हैं कि जो लोग दीक्षा समाप्त कर आचार्य से वर्ण प्राप्त कर चुके हों। वह ब्रह्मचारी, जो वर्ण से दीक्षित हो चुका है, तथा समस्त गृहस्थी, मतदाता हो सकते हैं (पढ़ रहे विद्यार्थी और अनपढ़ नहीं)। वानप्रस्थी और संन्यासी वर्ण का त्याग कर देते हैं, अतः वे मतदाता नहीं हो सकेंगे।

मताधिकार में 'वयस्कता' का ढोंग

आजकल प्रजातन्त्रवाद में केवल वोट (मत) ही आधार है। क्या सबको अपने मताधिकार के सम्बन्ध में ज्ञान है? यदि नहीं तो ऐसे व्यक्तियों को मताधिकार क्यों दिया गया है? क्या केवल इसलिए कि मूर्खों से काम निकालना बुद्धिमानों की अपेक्षा सरल है? अठारह वर्ष के वयस्कों को मताधिकार दे दिया गया है, जब कि इस आयु के युवकों के विवाह पर पाबन्दी लगी है। जो व्यक्ति घर की जिम्मेदारी नहीं निभा सकता, उसे देश की जिम्मेदारी में भागी बनाना कैसे समझ में आ सकता है? विधेयक पर कौन आपत्ति करता? सभी पार्टियों को वोट चाहिए। प्रत्येक पार्टी इन नासमझों से लाभ उठाने का भरसक यत्न करने को आतुर है।

देश में राज-सत्ता का आधार वोट होने से सम्प्रदायों व मतों में एक होड़-सी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
लगी है अपनी आबादी बढ़ाने की। जिस मत/सम्प्रदाय की आबादी अधिक हो जाएगी, वही बहुमत में आकर राष्ट्र को उसी मत/सम्प्रदाय का घोषित कर सकता है। अल्पसंख्यकों को पहले एक कोने में लगा दिया जाएगा, फिर उन्हें मत/सम्प्रदाय परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाएगा। इसमें मनोकामना पूरी न हुई तो उन्हें मार-पीटकर देश से निकाल दिया जाएगा व मार दिया जाएगा। बंगलादेश का उदाहरण हमारे सामने है। एक और भी भय है कि किसी मत के दूसरे देशों में रहनेवाले अथवा मतानुयायी राष्ट्र अपने मत वालों को कई प्रकार से भड़काते हैं। उन्हें लालच दिखाकर देश में अपने को बहुमत में करने के लिए धन भी दिया जाता है। यही कारण है जो झगड़ों की जड़ है। है कोई जो इन झगड़ों की जड़ों पर कुठाराघात कर सके? हमें दुःख तो इस बात पर है कि इस देश के वरिष्ठ कहलाए जानेवाले नेता भी राजसत्ता के लोभ में अपने ही भाषणों और गतिविधियों एवं कार्य-कलापों से देश को विघटन के मार्ग पर ले जा रहे हैं—कहीं भाषा के नाम पर, कहीं आरक्षण के नाम पर और कहीं अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक के नाम पर। जो पार्टियाँ पिछले चालीस वर्ष से अधिक समय लेकर भी सबको उठाने में असमर्थ रही हैं, क्या अधिकार है उन्हें सत्ता में आने का? इस लम्बे समय में क्यों नहीं इन पिछड़े लोगों को, अल्पसंख्यकों को ऊपर उठा पाए? कहाँ गया वह धन जो व्यय तो इनके नाम पर किया गया है किन्तु इन्हें जिसका कोई लाभ नहीं मिला है? योजनाओं पर पैसा लगाया जाता है, उसमें से इस देश की प्रजा के हित में कितना उन तक पहुँचा है? जो नहीं पहुँचा कहाँ गया वह धन? कौन उत्तरदायित्व लेगा इस घोटाले का? सभी पार्टियाँ जिम्मेदारी से अपना पल्ला बचाना चाहती हैं। देशवासियों को भ्रम में डालके उनसे अपना स्वार्थ साधना क्या देश-प्रेम अथवा राष्ट्र की भक्ति में गिना जाएगा? क्या कोई साधारण जन इस देश के लिए किसी बड़े नेता, पदाधिकारी एवं बड़े सरकारी कर्मचारियों तक आसानी से जा सकता है? क्यों इतनी दूरी है राज करनेवालों में और जिनके लिए राज्य किया जा रहा है? स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् जो चरित्र में गिरावट आई है वह क्यों और कैसे आ गई? कौन उत्तरदायी है इसका? कौन-सी पार्टी ऐसी है जो धर्म-निरपेक्षता का दम भरते हुए साम्प्रदायिक समूहों से समझौते नहीं करती? क्या देश में बढ़े दलों की दलदल में यह देश फँसकर नहीं रह गया है? क्या यह वही भारत देश है जहाँ बाहर के लोग चरित्र सीखने आते थे? मनु ने कहा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ (मनु० २।२०)

अर्थात् इस देश में उत्पन्न विद्वानों से पृथिवी के सम्पूर्ण मनुष्यों ने अपने-अपने कामों की शिक्षा पाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कौन लेगा इसका दायित्व ? किसने ध्यान दिया है और उपाय किये हैं इस देश में से भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, बलात्कार, लूट-खसोट, घूसखोरी, देशद्रोह को मिटाने के लिए ? कौन माई का लाल आगे आएगा इन सबको मिटाने के लिए ? क्या सचमुच निरीह प्रजा की ओर से ही आन्दोलन की प्रतीक्षा की जा रही है ? क्या परिभाषा है आज देश में चल रहे प्रजातन्त्र की ?

एक मतदाता मत डालने के लिए केन्द्र पर जाता है और जब उसे यह कहकर वहाँ से दुत्कारा जाता है कि उसका मत पड़ चुका है, तो जो उस व्यक्ति पर वज्रपात होता है उसका उत्तरदाता कौन है ? क्या यह दिन की भाँति स्पष्ट नहीं है कि कितने ही लोगों को मत देने के स्थान तक भी नहीं जाने दिया जाता ? कौन करेगा इनका संरक्षण ?

एक ओर आरक्षण का लोभ देकर, और दूसरी ओर दुष्ट व्यक्तियों से उनकी रक्षा करने में असफल रहकर, क्या उन हरिजनों को ससम्मान समता दी जा रही है ? अल्पसंख्यकों में जो कमजोरी है, इस चालीस वर्ष के समय में भी वह आज तक दूर क्यों नहीं हो पाई है ? है कोई जो इसका उत्तरदायित्व ले ?

चुनाव के समय भोली जनता से भाँति-भाँति के वादे करके वोट बटोरना और फिर उसकी सुध तक न लेना कौन-सा शिष्टाचार है ?

'राष्ट्री' के सम्बन्ध में पहले ही कहा जा चुका है—किसी भी दल अथवा व्यक्ति का राष्ट्री बन जाना देश के हितों से खिलवाड़ के समान ही ठहरेगा। जो भी दल अथवा व्यक्ति सर्वेसर्वा बन जाता है, वह केवल अपने लिए ही सब-कुछ करता है; देश, राष्ट्र और उसकी प्रजा तक उसका ध्यान कहाँ पहुँच पाता है ? यदि पहुँच पाता तो जो नैतिक गिरावट आ गई है क्यों आती ?

जो भी दल भारी बहुमत के आधार पर सत्ता में आ जाता है और फिर लगातार कई चुनावों में आता रहता है, वह दल अपने को ही सत्तासीन रखना चाहता है और इसके लिए निकृष्ट-से-निकृष्ट उपाय भी अपनाये जा सकते हैं; न्यायपालिका को अंगूठा दिखाया जा सकता है। सांवैधानिक अधिकारियों को अपने मार्ग में रुकावट समझकर उनकी भर्त्सना की जाती है, ताकि दूसरे डरकर चाटु-कार बन जावें। नियमानुसार कार्य करनेवाले कर्मचारियों को भी इसलिए सताया जाता है कि वे सत्ता में बैठे हुए व्यक्तियों की माँग पूरी करें, चाहे नियम-उल्लंघन ही करना पड़े। क्या ऐसी दशा में सरकारी कर्मचारी, जो राज्य के ही पुरजे हैं, सही काम कर पा सकते हैं ? सम्प्रदाय के नाम पर किसी प्रदेश को खड़ा करना क्या देश-हित में है ? यदि नहीं तो ऐसा करनेवालों के विरुद्ध कौन-सी कार्यवाही की जा सकती है, कौन बताएगा ? राज्य सरकारों के कार्य में केन्द्र द्वारा हस्तक्षेप किस प्रकार के प्रजातन्त्र के अन्तर्गत आता है ? प्रजा पर अपने मनमाने मंत्री और मुख्यमंत्री क्यों थोपे जाते हैं ? इसे प्रजातन्त्र का अंग कैसे मानें ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विधानसभाओं, राज्यसभाओं और संसद में जो प्रजातन्त्र के नाम पर ये सभी दल खिलवाड़ कर रहे हैं, न इन्हें अपना और न अपने दल की निष्ठा का विचार हैं; न देश के धन का और न इस देश का ही खयाल है। कौन लगायेगा इनपर बंदिश (पावन्दी)? एक-एक दिन सदन पर जो व्यय बैठता है, किसने हिसाब लगाया है? क्या यह जो कुछ वहाँ हुल्लड़ होता है प्रजातन्त्र का अंगविशेष है? और यदि यह हुल्लड़ न मचाया जावे तो क्या प्रजातन्त्र मर जाएगा?

जिन पार्टियों ने वर्षों से अपने ही चुनाव नहीं कराये हैं, क्या उनको प्रजातन्त्र के नाम पर चुनाव के मैदान में आने का नैतिक अधिकार है?

विज्ञ पाठकों के समक्ष प्राचीन और अर्वाचीन, दोनों पक्ष रख दिये गए हैं। देश के सुधीजन विचार करें और देश-हित में आगे आवें।

इस देश की नैतिकता देखनी हो तो आप छान्दोग्य उपनिषद् को पढ़ें। राजा अश्वपति के पास कुछ संन्यासी आते हैं। राजा उनका आतिथ्य करना चाहते हैं, परन्तु संन्यासी उनका आतिथ्य स्वीकार नहीं करते। तब राजा अश्वपति ने घोषणा की थी—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात् मेरे जनपद (देश) में कोई चोर नहीं है, कोई कृपण नहीं है; कोई शराबी नहीं है, न कोई यज्ञ-हवन न करनेवाला है, कोई अविद्वान्(मूर्ख)नहीं है, व्यभिचारी नहीं है, फिर व्यभिचारिणी तो हो ही कैसे सकती है?

आज विश्व में कौन-सा देश है जो ऐसी घोषणा कर सके? हमारी संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक है यह घोषणा!

आज इस प्रजातन्त्र के नाम पर शराब की दुकानें खोलने के लिए धड़ाधड़ ठेके दिये जा रहे हैं। कितने लोग सभ्य बने हैं इस शराब के सेवन से? क्या बहुत सारे झगड़े और दंगे इस शराब के कारण ही नहीं होते हैं? फिर ये देश के ठेकेदार क्यों आँखें बन्द किये बैठे हैं? वे क्यों नहीं स्पष्टतया बताते कि उनका असल उद्देश्य क्या है?

पश्चिम के लोग अपने देश के डॉक्टरों के शोध के परिणामों को देखते हुए मांस, मछली, अण्डा छोड़ते आ रहे हैं, अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए; और इस प्रजातन्त्रीय भारत देश में भोली प्रजा को अण्डे-मछली-सेवन के लिए दूरदर्शन पर विज्ञापन देकर, अथवा सलाह देकर बढ़ावा दिया जा रहा है! क्या इससे बेहतर और कोई सेवा देश की नहीं की जा सकती? देश के युवकों को इन वस्तुओं के प्रयोग के लिए क्यों उकसाया जा रहा है? क्यों उनके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ की जा रही है?

तम्बाकू में निकोटिन नाम का विष माना जाता है। सिगरेट की डिब्बियों पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी लिखा जाता है कि 'यह स्वास्थ्य के लिए हानिकर है'। जो तम्बाकू का प्रयोग करता है वह तो अपना सत्यानाश कर ही रहा है, परन्तु जो उनके साथ यात्रा करते हैं, उन्हें भी तो यह जहर जबरदस्ती पीना पड़ रहा है। राजधानी की बसों के अस्सी प्रतिशत तक ड्राइवर और कण्डक्टर ड्यूटी के दौरान भी बीड़ियों की दूषित दुर्गन्ध यात्रियों को हठात् पिलाते रहते हैं, बावजूद इस लिखित चेतावनी के कि 'धूम्रपान निषिद्ध है'। जान-बूझकर भी जो बुरे मार्ग पर चले-चलाये, क्या वह कम गुनहगार है ? क्या इसका दण्ड उसे मिलना नहीं चाहिए ? क्या देश के नेता इस दण्ड को भुगतने को तैयार हैं ?

धन शरीर से परिश्रम कर कमाया जाना ही श्रेयस्कर है। अनायास हाथ आये धन की किसने रखवाली की है ? जैसे आता है वैसे ही जाता है। फिर यह लॉट्रियों का धन्धा क्यों शुरू किया है इस अभागे देश में ? जब व्यक्ति अधिक पैसा पाने की चाह में जो जेब में है उसके टिकट खरीद लेता है तो फिर अनशन करना ही पड़ेगा ! या फिर चोरी करके, अथवा किसी को लूटकर पापी पेट की आग बुझानी पड़ेगी। इस दुष्कर्म के लिए क्या ये लॉट्रियाँ युवकों को बाध्य कर देश की शान्ति को भंग करने का कारण नहीं हैं ? किसको कहें इस शान्ति को भंग करने-वाला ? कौन है वह जो इस कारण दण्ड का भागी है ? कौन है जो उसे दण्डित करेगा और कैसे करेगा जबकि सरकार ही कानूनी संरक्षण देकर हर पटरी पर लॉटरी के नाम पर जुए के अड्डे चलने दे रही हो ?

कौन-सा ऐसा देश है जो भोगी और विलासी रहते हुए खड़ा रह गया है ? जब यह सर्वमान्य है कि भोग और विलास रोग और शोक के कारण हैं तो फिर देश के भविष्य (नवयुवकों) का नाश करने की अनुमति किसने दी है इन प्रजातंत्र के ठेकेदारों को ? क्यों सिनेमा, रेडियो और दूरदर्शन से भोग-विलास का नंगा प्रचार किया जा रहा है ? कौन-सी देश-सेवा में गिनें इसे ? क्या आज के नवयुवक सभी बुरी आदतें सिनेमा से नहीं सीख रहे ? सिनेमा में किसी को चोरी करते देख उसी ढंग से वह चोरी करना सीखकर कितना नाम ऊँचा करेगा इस देश का ? लड़कियों से छेड़छाड़ क्या इन नवयुवकों ने अपने घर पर सीखी है ? नहीं; सिनेमा से ही यह खुराफात अपने साथ लाते हैं। आये-दिन मार-पीट और दंगा-फसाद होते हैं, क्या यह इस प्रजातन्त्र के लिए आवश्यक है ? नहीं तो फिर इन सिनेमाओं को क्यों हिदायत न दी गई कि यहाँ केवल वही चलचित्र दिखाये जावें जिनसे कोई बुराई न सीख सके ? यही हाल दूरदर्शन का भी है। कितना देश-प्रेम, देश-हित, देश-उत्थान का पाठ पढ़ाया जा रहा है इस देश की जनता को ? रेडियो पर अश्लील गाने क्यों होते हैं ? घर में रेडियो सुननेवाले माता-पिता क्या अपनी सन्तान के साथ ये गाने सुन सकते हैं ? अथवा दूरदर्शन पर प्रेमालाप के चित्र देख सकते हैं ? परिवार एकत्र होकर यदि ऐसे अश्लील गानों को सुनेगा अथवा अश्लील

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
चलचित्रों को देखेगा तो परिवार में जो छोटे-बड़ों में मान-ममता का भाव होता है वह मिट जावेगा और परिवार में जो बाप-बेटे, माँ-बेटी, बहिन-भाई के विचार हैं वे समाप्त हो जाएँगे। एक प्रकार की ढिठाई उस परिवार में घर कर जाएगी जो समय पाकर उस परिवार को तोड़-फोड़ देगी और प्रत्येक सदस्य को इसका दण्ड भुगतना पड़ेगा? क्या यह अश्लीलता इस प्रजातन्त्र की जड़ों को सुदृढ़ करने का काम दे रही है?

विचारणीय प्रश्न है—

१. **आरक्षण**—इस आरक्षण के आधार पर प्रायः स्कूलों और कालेजों में कम नम्बर होने पर भी दाखिला मिल जाता है, और चूँकि 'आरक्षण आगे भी मिलेगा' यह सोचकर जिसे आरक्षण दिया जा रहा है वह अपनी प्रतिभा न चमकाकर उसे धुँधला कर रहा है। जब उसके सामने उससे अधिक प्रतिभावान् युवकों को अवसर नहीं मिलता तो उन्हें, इन लोगों के प्रति जिन्हें यह आरक्षण दिया जा रहा है, द्वेष की आग घेरे में ले लेती है जो कभी भी वायु-वेग पाकर देश को झुलस देगी। चालीस वर्षों में भी जो वहीं-के-वहीं रह गये हैं, इसपर किसी ने विचार किया है? क्या इतना लम्बा समय थोड़ा रहा है? यदि हाँ तो क्योंकर? यदि नहीं तो इनके अब तक पिछड़े रहने का दोष किसे दिया जाए? यदि ये स्वयं दोषी हैं तो इन्हें दण्ड भुगतना ही चाहिए, और यदि कोई तन्त्र अथवा योजना दोषी है तो इनके प्रणेता को क्यों नहीं पकड़ा गया और उसे दण्ड दिये बिना क्यों छोड़ा गया है? देश के एक बड़े वर्ग के साथ यह खिलवाड़ जो भी कर रहे हैं, उन्हें परदे से बाहर लाना होगा और यदि वे अपराधी पाये जाते हैं तो दण्ड भी देना होगा।

देश-हित में जो भी रुकावट हो उसका हटाया जाना अनिवार्य है। अपराधी से देश बहुत बड़ा है। अपराधी को देश के धन-जन से खिलवाड़ का और अधिक अवसर न देकर इसे सुलझाना होगा। यह आभास होना भी आवश्यक है कि अब तक उत्तरदायित्व किस पर था (ताकि उसे दण्ड दिया जा सके) और आगे कौन उत्तरदायित्व लेता है (ताकि उसकी ओर देश की निगाहें रहें और देश देखे कि प्रगति क्या हो रही है)।

२. **धर्म-निरपेक्षता**—धर्म और मत/सम्प्रदाय में बहुत बड़ा अन्तर है। धर्म वह जिसको सब धारण कर सकें तथा उसके धारण से उसका तो लोक और परलोक सुधरे, परन्तु किसी दूसरे को भी उस धर्म के कारण कोई हानि न हो। वास्तव में जो अच्छी बातें हैं उनका कोई भी मत/सम्प्रदाय शत्रु नहीं है। सर्वमाननीय सिद्धान्तों अथवा नियमों का ही नाम धर्म है। मत और सम्प्रदाय में अक्ल का दखल नहीं है। धर्म को हीरे की भाँति किसी भी वस्तु से रगड़कर देखें, उसमें कोई त्रुटि न आवेगी, जबकि मत/सम्प्रदाय अक्ल की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इसीलिए कट्टरपन इनमें वर्तमान है। संविधान में धर्म के स्थान पर मत/सम्प्रदाय शब्द रखे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जावें। Secular शब्द धर्म का पर्यायवाची नहीं है। कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था या वर्ग/पार्टी, मत/सम्प्रदाय को हवा देकर भड़कावे तो उसे दण्ड दिया जावे।

३. **भाषा**—सभी भारतीय भाषाएँ हमारी अपनी हैं। इन्हीं का आदर हो। विदेशी भाषा से पिण्ड जितना शीघ्र छूट सके देश का भला है। खेद तो इस बात का है कि देश के कार्यकर्ताओं को अपने देश के साहित्य और इतिहास से कोई लगाव नहीं है, न ही उन्हें इस देश की संस्कृति और सभ्यता से ही लगाव है। वे जो कुछ भी इस देश के बारे में जानते हैं वह पश्चिमी विद्वानों द्वारा लिखी पुस्तकों के आधार पर है जिनमें जान-बूझकर गड़बड़ की गई है। एक ओर तो एक व्यक्ति अपने घर की बात स्वयं जानता हो, और दूसरी, एक व्यक्ति को उसके घर के बारे में एक बाहर का व्यक्ति बताता हो, इन दोनों में अन्तर है। घर के सदस्य से अपने घर की बात जानने में असलियत होती है, जबकि बाहर के व्यक्ति द्वारा बताई गई बात में त्रुटि रहना अनिवार्य है। देश में सभी पदों अथवा कालेजों अथवा दूसरे प्रकार की औद्योगिक संस्थाओं में दाखिले के लिए परीक्षा चाहे विदेशी भाषा में भी रख लें, परन्तु देश की भाषाओं का अपमान सहनीय नहीं है।

४. **अल्पसंख्यक/बहुसंख्यक**—इस देश में प्रत्येक नागरिक को संविधान द्वारा कुछ अधिकार दिये गये हैं। अल्पसंख्यकों को बढ़ावा देकर बहुसंख्यक की उपेक्षा न तो समझ में आती है और न यह देश-हित में है। बहुसंख्यक में आना क्यों पाप माना जाता है और अल्पसंख्यकों में आना पुण्य क्यों? इन दोनों शब्दों का प्रयोग तुरन्त बन्द किया जावे। ये सीधे तौर पर विघटन का कारण बन रहे हैं।

५. **सुविधाएँ व अधिकार**—देश के प्रत्येक नागरिक को, चाहे किसी भी वर्ग या मत/सम्प्रदाय को माननेवाला हो, अपनी प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ने के समान अधिकार और समान सुविधाएँ हों। प्रतिभा का सम्मान किया जावे; उसकी अवमानना अन्ततः देश के लिए घातक सिद्ध होगी। भेद से भेद इसी प्रकार उत्पन्न होगा जैसे ईर्ष्या से ईर्ष्या, द्वेष से द्वेष, तथा घृणा से घृणा और क्रोध से क्रोध भड़कता है।

देश की उन्नति के लिए देश में शान्ति और सद्भाव की विद्यमानता अनिवार्य है। जो भी अब हो रहा है इससे सभी शंकालु बन चुके हैं। व्यक्ति, वर्ग, मत/सम्प्रदाय के मुकाबिले यदि देश को कमतर समझा जाएगा तो यह एक ऐसी भूल होगी जिसका दण्ड न जाने कितनी पीढ़ियों को भुगतना पड़ सकता है।

देश के श्रमजीवियों से, बुद्धिजीवियों से, विधिवेत्ताओं से, व्यावसायिक महानुभावों से, देश के नेताओं से (चाहे सत्ता में हों या विपक्ष में) हमारा नम्र निवेदन है कि वे इन प्रश्नों पर सोच-विचार करें।

मत का जो अधिकार दिया गया है उसका पहले ठीक प्रकार से प्रयोग करना सिखाया जावे। हथियार देने से पूर्व उसके प्रयोग की विधि यदि नहीं बताई जाती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो वह हथियार कितनी ही मारक स्थिति रखता हो बेकार है।

जैसे पदों के भरने के लिए नियम और योग्यताएँ स्पष्ट की गई हैं, ऐसे ही मत के लिए भी सोच-विचारकर योग्यताएँ निर्धारित कर ली जावें।

मूर्खों के बहुमत में आने से देश का कभी भी भला नहीं हो सकता। हाँ, उनको आगे करके अपना-अपना स्वार्थ अवश्य सिद्ध हो सकता है। व्यक्तिगत, दलगत, वर्ग गत, मत/संप्रदायगत स्वार्थ से देश का स्वार्थ (हित) सर्वोपरि है। उपर्युक्त सभी प्रश्नों का प्रजातन्त्र से सीधा सम्बन्ध है। इसलिए इनका समाधान होना अनिवार्य है। किसी कवि ने कहा है—

यह जब्र[1] भी देखा है तारीख[2] की नज़रों[3] ने,
लम्हों[4] ने खता[5] की थी, सदियों[6] ने सज़ा[7] पाई।

[१. जबरदस्ती (बलात्कार) २. इतिहास, ३. दृष्टि,
४. पल, ५. भूल-चूक, ६. शताब्दियाँ, ७. दण्ड]

नोट—हमने इस लेख में प्रचारक श्री धर्मविज्ञान मुनि के लेख 'राजनीति के मूल सिद्धान्त' जो परोपकारी अंक अगस्त १९८९ के १४, १५, १६, १७, १८ तथा २० पृष्ठों पर छपा है, भरपूर सहायता ली है और कुछ अंश ज्यों-के-त्यों दिये हैं। तदर्थ उनका तथा पत्रिका के सम्पादक का आभार प्रकट करते हैं।

□□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे प्रकाशन

महात्मा आनन्द स्वामी

मानव और मानवता	२५.००
तत्वज्ञान	२०.००
प्रभु-मिलन की राह	२०.००
घोर घने जंगल में	२०.००
प्रभु-दर्शन	१५.००
दो रास्ते	१५.००
यह धन किसका है	१५.००
उपनिषदों का सन्देश	१५.००
बोध-कथाएं	१५.००
दुनिया में रहना किस तरह	१०.००
मानव-जीवन-गाथा	१०.००
प्रभु-भक्ति	८.००
महामन्त्र	७.५०
एक ही रास्ता	८.००
भक्त और भगवान	८.००
आनन्द गायत्री कथा	६.००
शंकर और दयानन्द	५.००
सुखी गृहस्थ	४.००
सत्यनारायण कथा	४.००
Anand Gayatri Discourses	10.00
The Only Way	12.00
महात्मा आनन्द स्वामी जीवनी उर्दू (रणवीर)	१०.००
महात्मा आनन्द स्वामी हिन्दी	२५.००

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	प्रेस में
सत्य की खोज	५०.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००

महर्षि दयानन्द सरस्वती

पंचमहायज्ञविधि	३.००
व्यवहार भानु	२.५०
आर्योद्देश्यरत्नमाला	०.७५
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	०.७५

डॉ० भवानीलाल भारतीय

श्रीकृष्ण चरित	५०.००
श्यामजी कृष्ण वर्मा	२४.००
आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय	२५.००

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

सृष्टि विज्ञान और विकासवाद	४०.००
वेद-मीमांसा	५०.००
मैं ब्रह्म हूँ	४.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द

महाभारतम् (तीन खण्ड)	६००.००
वाल्मीकि रामायण	१००.००
षड्दर्शनम्	१००.००
चाणक्यनीति दर्पण	५०.००
भर्तृहरिशतकम्	१५.००
विदुर नीति	२०.००
प्रार्थना लोक	२५.००
प्रार्थना प्रकाश	प्रेस में
प्रभात वन्दन	४.००
ब्रह्मचर्य गौरव	८.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	८.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	प्रेस में
दिव्य दयानन्द	८.००
कुछ करो कुछ बनो	१०.००
आदर्श परिवार	१०.००
वैदिक उदात्त भावनाएँ	१०.००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	२५.००
वैदिक विवाह पद्धति	६.००
ऋग्वेद सूक्तिसुधा	२५.००
यजुर्वेद सूक्ति सुधा	१२.००
अथर्ववेद सूक्ति सुधा	१५.००
सामवेद सूक्ति सुधा	१२.००
ऋग्वेद शतकम्	६.००
यजुर्वेद शतकम्	६.००
सामवेद शतकम्	६.००
अथर्ववेद शतकम्	६.००
भक्ति संगीत शतकम्	प्रेस में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी श्रद्धानन्द

कल्याण मार्ग का पथिक ६०.००
स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली
(ग्यारह खंड) ६६०.००

Swami Satya Prakash Sarasvati

प्राचीन भारत में रसायन का विकास ३९५.००
प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार ३२५.००
Founders of Sciences in Ancient India
Two Volumes 500.00
Coinage in Ancient India
Two Volumes 600.00
Critical Study of Brahmagupta and his works 350.00
Geometry in Ancient India 350.00
God in His Divine Love 5.00
The Critical and Cultural Study of Satapath Brahman 700.00

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड) १८००.००
जीवात्मा २५.००
मुक्ति से पुनरावृत्ति ३.००

प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु सम्पादित

महात्मा हंसराज ग्रन्थावली (४ खंड) २४०.००
महात्मा हंसराज जीवनी ६०.००

पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण

महाभारत सूक्तिसुधा ४०.००

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

धर्म का स्वरूप ३५.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

ऋषि बोध कथा १०.००

सुरेशचन्द वेदालंकार

महकते फूल १०.००
ईश्वर का स्वरूप १५.००

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

दयानन्द प्रकाश ३५.००

पं० मदनमोहन विद्यासागर

ईश्वर प्रत्यक्ष ९.००

ओम्प्रकाश त्यागी

वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय ६.००

प्रो० नित्यानन्द पटेल

पूर्व और पश्चिम ३५.००
संध्या विनय ६.००
आत्म विकास की राहें ५०.००

पं० नरेन्द्र

हैदराबाद के आर्यों की साधना व संघर्ष १०.००

प्रो० रामविचार एम० ए०

आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ४.००
वेद सन्देश ३०.००

प्रो० ओम्प्रकाश वेदालंकार

वैदिक पंचायतन पूजा ३५.००

प्रा० विष्णुदयाल (मॉरीशस)

महर्षि का सच्चा स्वरूप ४.००

म० नारायण स्वामी

प्राणायाम विधि २.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० राजनाथ पांडेय

वेद का राष्ट्रगान	१.००
त्रिकालजयी	१०.००

कवि कस्तूरचन्द

ओंकार एवं गायत्री शतकम्	३.००

घर का वैद्य

लेखक : सुनील शर्मा

घर का वैद्य	प्याज	४.००
,,	लहसुन	४.००
,,	गन्ना	४.००
,,	नीम	४.००
,,	सिरस	४.००
,,	तुलसी	४.००
,,	आँवला	४.००
,,	नींबू	४.००
,,	पीपल	४.००
,,	आक	४.००
,,	गाजर	४.००
,,	मूली	४.००
,,	अदरक	४.००
,,	हल्दी	४.००
,,	बरगद	४.००
,,	दूध-घी	४.००
,,	दही-मट्ठा	४.००
,,	हींग	४.००
,,	नमक	४.००
,,	बेल	४.००
,,	शहद	४.००
,,	फिटकरी	४.००
,,	साग-सब्जी	४.००
,,	अनाज	४.००
,,	फल-फूल	४.००
घर का वैद्य ५ जिल्दों में		१७५.००

कर्मकांड की पुस्तकें

आर्य सत्संग गुटका	२.००
पंचयज्ञ प्रकाशिका	५.००
वैदिक संध्या	०.७५
सत्संग गुटका (छोटा साइज)	१.००
सत्संग मंजरी	६.००
Vedic Prayer	3.00

त्रिलोकचन्द विशारद कृत

महर्षि दयानन्द	३.००
स्वामी श्रद्धानन्द	३.००
गुरु विरजानन्द	२.५०

अन्य प्रकाशन

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

शतपथ ब्राह्मण (तीन खण्ड)	१८००.००
जीवात्मा	२५.००
अद्वैतवाद	३५.००
आस्तिकवाद	१५.००
इस्लाम के दीपक	२२.००
मीमांसा प्रदीप	२५.००
आर्य समाज	८.००
वैदिक धर्म और आर्य समाज	८.००
वैदिक मान्यताएँ	६.००
इस्लाम और आर्य समाज	९.००
हम क्या खायें घास या मांस	६.००
कर्मफल सिद्धांत	४.००
भारतीय पतन और उत्थान	५.००
पूजा	१५.००
मैं और मेरा भगवान	१२.००
उपदेश सप्तक	१.७५
वेद और मानव कल्याण	२.५०
Light of Truth	65.00
I and my God	12.00
Worship	12.00
Christianity in India	12.00
Superstitions	12.00
Vedic Culture	15.00
Reason & Religion	12.00
Philosophy of Dayanand	40.00

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती कृत

प्राचीन भारत में रसायन का विकास	३९५.००
प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार	३२५.००
योगऔर उनकी अनुभूमिका	६.००
योग सिद्धान्त और साधना	८.००
योग और प्राण सौष्ठव	११.००
योगप्राणायाम और चेतनाएँ	११.००
प्रभु के मार्ग पर	७.००
प्रार्थना और चिन्तन	६.००
मनुष्य और मानवधर्म	५.००
ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान	३.००
अध्यात्म और आस्तिकता	७.००
महर्षि दयानन्द समस्त क्रान्ति के दूत	३२.००
आर्य समाज : संघर्ष और समस्याएँ	३५.००
Critical Study of Philosophy of Dayanand	50.00
Vincit Veritas	30.00
Arya Samaj : A Renaissance	30.00
Dayanand : APhilosopher	65.00
Agnihotra : A Chemical Study	20.00
Agnihotra (Ritual)	5.00
Vedic Sandhya (Trans.)	4.00
Man and his Religion	6.00
God and His Divine Love	5.00
The Self Life and Consciousness	12.00
Humanitarian Diet	10.00
Three Hazards of Life	25.00
Dayanand and his Mission	3.00
Architects of Arya Samaj	12.00

महावीर प्रसाद

सूर्य सिद्धान्त	१२०.००

बाल साहित्य

बाल शिक्षा ले० स्वामी दर्शनानन्द	१.००
वैदिक शिष्टाचार	२.००

सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०

नैतिक शिक्षा	प्रथम ०.७५
नैतिक शिक्षा	द्वितीय १.५०
नैतिक शिक्षा	तृतीय २.५०
नैतिक शिक्षा	चतुर्थ ३.००
नैतिक शिक्षा	पंचम ३.००
नैतिक शिक्षा	षष्ठ ३.५०
नैतिक शिक्षा	सप्तम ४.००
नैतिक शिक्षा	अष्टम ४.००
नैतिक शिक्षा	नवम ५.००
नैतिक शिक्षा	दशम ५.००

स्वामी योगेश्वरानन्द कृत

वहिरंग योग	७०.००
आत्मविज्ञान	८०.००
ब्रह्मविज्ञान	१००.००
दिव्यज्योति विज्ञान	४०.००
प्राण विज्ञान	३०.००
दिव्य शब्द ज्ञान	४०.००
निर्गुण ब्रह्म	३०.००
व्याख्यानमाला—५ भाग	१५०.००
हिमालय का योगी—I	४५.००
हिमालय का योगी—II	७५.००
First Step to Higher Yoga	65.00
Science of Soul	60.00
Science of Divinity	60.00
Science of Divine Lights	45.00
Science of Vital Force	40.00
Science of Divine Sound	40.00
The Essential Colourlessness of the Absolute	40.00
Beads of Sermons	30.00
Himalaya Ka Yogi—I	45.00
Himalaya Ka Yogi—II	45.00

गजानन्द आर्य

वीरांगना महारानी कैकेयी	१५.००
आर्य समाज की मान्यताएँ	४.००

सत्यानन्द आर्य

जीवन सौरभ	१०.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जयदेव वेदालंकार कृत वेद भाष्य

ऋग्वेद भाषा भाष्य ७ भाग	२१०.००
अथर्ववेद भाषा भाष्य ४ भाग	१२०.००
यजुर्वेद भाषा भाष्य २ भाग	६०.००
सामवेद भाषा भाष्य १ भाग	३०.००

नारायणदास कपूर

Light of Yoga	15.00

स्वामी वेदानन्द कृत

स्वाध्याय सन्दोह	५०.००
स्वाध्याय-सन्दीप	४०.००

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त, (तीन भाग)	२४०.००

मैक्समूलर

भारत की विश्व को देन	६५.००

आचार्य अभयदेव

वैदिक विनय	६०.००
ब्राह्मण की गौ	४०.००
तरंगित हृदय	४०.००
यज्ञ योग	४०.००

सार्वदे० सभा द्वारा प्रकाशित

ऋग्वेद भाष्य हिन्दी ५ भाग	२६०.००
अथर्ववेद भाष्य हिन्दी २ भाग	१४०.००
यजुर्वेद भाष्य हिन्दी १ भाग	७०.००
सामवेद भाष्य हिन्दी १ भाग	५०.००

विमलचन्द्र विमलेश

ऋषि गाथा महाकाव्य	२०.००

वीर सावरकर कृत

१८५७ स्वातन्त्र्य संग्राम	६०.००
काला पानी	२०.००
क्रान्ति के नक्षत्र	२०.००
गोमांतक	१७.५०
मोपला	१७.५०
उःशाप	१७.००
हिन्दू पद पादशाही	३०.००
हिन्दुत्व	१५.००
मेरा आजीवन कारावास	६०.००
क्रान्तिकारी चिट्ठियाँ	१७.५०

सत्याह सुनामी

काफिर	२५.००
आखिर जीत हमारी	१६.००
उस शिला को प्रणाम	२२.००

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार	प्रेस में
सत्य की खोज	५०.००
वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व	४०.००
श्रीमद्भगवद्गीता	६५.००
ब्रह्मचर्य सन्देश	२५.००
एकादशोपनिषद्	६५.००
उपनिषद् प्रकाश	८५.००
संस्कार-चन्द्रिका	६५.००
बुढ़ापे से जवानी की ओर	६०.००
Old age to youth	७८.००
होमियोपैथिक के मूल सिद्धान्त	५०.००
होमियोपैथिक औषधियाँ सजीव चित्रण	८५.००
रोग उनकी होमियोपैथिक चिकित्सा	८५.००
होमियोपैथी का क. ख. ग.	५४.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri. Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राचीन भारत में रसायन का विकास

लेखक : श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती
(पूर्व डॉ० सत्यप्रकाश, डी०एस-सी०)

विज्ञान विषय के एकमात्र ख्याति-प्राप्त लेखक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती प्रयाग विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्राध्यापक थे। इस ग्रन्थ में उन्होंने जो अनुसन्धान और अन्वेषण किया है वह वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद [illegible] रसायन पर जितने भी प्राचीन ग्रन्थ आज उपलब्ध हैं उनकी भी जानकारियाँ इसमें समाविष्ट कर दी गई हैं। कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं :

चरक, सुश्रुत, अष्टांग संग्रह, रस हृदय तंत्र, चिकित्सा कालिका, रसार्णव, रस रत्नाकर, रससार, मन-तंत्र, रस प्रकाश सुधाकर, रसरत्न समुच्चय, रसेन्द्र चिन्तामणि, रसेन्द्रसार संग्रह, रस प्रदीप, धातुर रत्नमाला, रस संकेत कालिका धातु क्रिया, धातुमंजरी आदि आदि।

लेखक ने इस ग्रंथ को छः खंडों में विभाजित किया है

इस ग्रंथ के पहले चार खंडों में

- ☐ वैदिक और ब्राह्मण काल
- ☐ आयुर्वेद काल
- ☐ नागार्जुन काल और रसतंत्र का आरम्भ
- ☐ रसतंत्र का उत्तर काल

पाँचवें भाग में प्रकृति, द्रव्य, परमाणु परिवर्तन, कार्य-काल सम्बन्ध आदि दार्शनिक विचारों का संक्षिप्त विवरण है।

अन्तिम खंड में दैनिक उपयोग की उन सामग्रियों की चर्चा की गई है जिनमें रसायन का उपयोग प्रत्यक्षतः अथवा परोक्षतः प्रत्येक युग में होता रहा है, जैसे : ताम्र और लोहा, अग्निचूर्ण और अग्निक्रीड़ा, काँच गन्धशास्त्र, केशराग और स्याही, कपड़ों की धुलाई-रीठा, सब्जी, धातुमूर्तियाँ; मिट्टी का तेल, मन्दिरों का लाल लेप आदि।

डिमाई आकार : पृष्ठ संख्या ८५० मूल्य रु० ३९५.००

गोविन्दराम हासानन्द
नई सड़क, दिल्ली-६

प्रकाशक-मुद्रक विजयकुमार ने सम्पादित कर अजय प्रिंटर्स, दिल्ली-३२ में मुद्रित करा वेदप्रकाश कार्यालय, ४४०८ नयी सड़क, दिल्ली से प्रसारित किया।
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi